प्रस्तावना

'सृष्टि चक्र' प्रसन्न कुमार चौधरी की एक लंबी कविता है। 20 वीं सदी के अंत में लिखी गई यह कविता अनादि काल से अनंत की ओर अग्रसर सभ्यता का तथा आदिम मनुष्य से अभिनव मनुष्य की चेतना यात्रा का आख्यान प्रस्तुत करने के साथ-साथ बलि से सृजन की कथा भी कहती है। इसके दो खंड हैं:- 'मन एव मनुष्याणां' और 'फिर आया यह पथिक स्मृति संग लिये'। पहला खंड सृष्टि के आरंभ से वर्तमान मानवीय सभ्यता तक की यात्रा को व्यक्त करने के साथ-साथ काव्यनायक द्वारा दिए गए तन-मन की बलि की कथा प्रस्तुत करता है। दूसरे खंड में मनुष्यकी स्मृति की चर्चा के साथ-साथ, सृष्टि के चक्र को पूरा करने हेतु पुन: काव्यनायक के स्मृति के साथ संसार में लौटने की कथा को दर्शाया गया है।

लंबी कविताएँ महाकाव्य की उत्तराधिकारिणी है। महाकाव्य में इत्तिवृत और नाटकीयता दोनों परस्पर संग्रथित रहते हैं। आधुनिक काल में उपन्यासों में जहाँ इतिवृत्त को विस्तार मिला वहीं लंबी कविताओं में नाटकीयता को अधिक महत्त्व मिला। बहुत सारे आलोचकों ने लंबी कविता के लिए कुछ प्रतिमान निर्धारित किए हैं जिसमें नाटकीयता के अलावे अन्य संरचनात्मक गुण - अन्विति, विचार और बिंब की केंद्रीयता, दृश्यचित्र और विविध संदर्भ, प्रदीर्घता, भाषा की तेजस्विता, अंतहीन अंत, सर्जनात्मक तनाव, विधायक आधार शामिल हैं। इन्हीं संरचनात्मक गुणों के कारण लंबी कविताओंमें चिंतन अधिक संघनित होता है। 'परिवर्तन', 'प्रलय की छाया', 'राम की शक्तिपूजा', 'अंधेरे में', 'असाध्य वीणा', 'मुक्ति प्रसंग' जैसी लंबी कविताएँ इसकी उदाहरण हैं। 'सृष्टि चक्र' कविता भी इसी प्रकार की एक लंबी कविता है। इस कविता का सृजन स्वत:स्फूर्त प्रक्रिया से न होकर प्रसन्न कुमार चौधरी के मौलिक चिंतन द्वारा संभव हुआ है। 'सृष्टि चक्र' कविता एक जटिल एवं संश्लिष्टकविता है।

दैनंदिन व्यवहार में जहाँ सामान्य भाषा का प्रयोग होता है, वहीं साहित्य की भाषा एवं इसकी भंगिमा विशिष्ट होती है। शैलीविज्ञान इसी विशिष्ट भाषा की बनावट और बुनावट का अध्ययन करता है। यह अध्ययन चयन, विचलन, सामानांतरता जैसे शैली तत्त्व एवं भाषा विज्ञान के विभिन्न उपादानों द्वारा संभव होता है। जी. डब्लु. टर्नर, रोमन यॉकोब्सन, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, सुरेश कुमार, नगेंद्र, भोलानाथ तिवारी, पांडेय शशिभूषण शीतांशुप्रभृति विद्वानों ने शैलीविज्ञान एवं उनके उपादानों की अवधारणा एवं स्वरूप को बहुत हद तक स्पष्ट किया है। इसलिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में शैली एवं शैलीविज्ञान की अवधारणा एवं स्वरूप पर बिना विचार किए विभिन्न विद्वानों के सिद्धांतों, मान्यताओं, मतों आदि को जानकर-समझकर सीधे शैलीविज्ञान के विभिन्न उपादानों की थोड़ी-बहुत चर्चा करते हुए 'सृष्टि चक्र' कविता का शैलीतात्त्विक विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण से 'सृष्टि चक्र' कविता की बनावट और बुनावट को स्पष्ट करते हुए उसके मर्म का उद्घाटन करने की कोशिश की गई है। इस लघु शोध-प्रबंध में लंबी कविताओं के शिल्प विधान के संदर्भ में 'सृष्टि चक्र' कविता का महत्त्व रूपायित किया गया है। इस तरह के शोध-कार्य से प्रेरणा लेकर भविष्य में शैली-वैज्ञानिक दृष्टि से अन्य लंबी कविताओं के अध्ययन के लिए लोग अग्रसर होंगे, उन्हें इससे अपेक्षित सहायता मिलेगी।

प्रस्तुत शोध कार्य में 'सृष्टि चक्र' कविता का अध्ययन/विश्लेषण संरचनात्मक शैलीविज्ञान की सहायता से किया गया है। इसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध प्रविधि के साथ-साथ विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक शोध प्रविधि का भी उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का पहला अध्याय **'लंबी कविताओं का रचना-विधान और 'सृष्टि चक्र''** है । इस अध्याय में लंबी कविता के पूर्व की काव्यपरंपरा में महाकाव्य की श्रव्य से पठ्य तक की यात्रा की बेहद संक्षिप्त चर्चा करते हुए उसके स्थान पर लंबी कविता के आगमन की चर्चा की गई है। इसके बाद लंबी कविता के रचना विधान एवं उनके संरचनात्मक गुणों पर प्रकाश डाला गया है। अंत में लंबी कविताओं का एक विवरण देते हुए उन सभी संरचनात्मक गुणों के आधार पर 'सृष्टि चक्र' कविता का विश्लेषण किया गया है ।

दूसरा अध्याय **'सृष्टि चक्र कविता का विश्लेषण'** है। इस अध्याय में 'सृष्टि चक्र' कविता का विश्लेषण उनके कथ्य के आधार पर किया गया है। इस अध्याय में कवि द्वारा कविता के विभिन्न खंडों-उपखंडों में प्रयुक्त द्वंद्वों, अस्तित्वगत प्रश्नों, जीवनबोध की जटिलताओं, विसंगतियों, विडंबनाओं, मानवीय संवेदना, आत्मसंघर्ष, सामाजिक उथल-पुथल को उभारने की कोशिश की गई है।

तीसरा अध्याय **''सृष्टि चक्र' : शैलीतात्त्विक विश्लेषण'** है। इस अध्याय में संरचनात्मक शैलीविज्ञान के उपकरणों में संरचना, बुनावट और अग्रगामिता का परिचय दिया गया है। तदुपरांत अग्रगामिता के विभिन्न तत्त्वों चयन, विचलन और समानांतरता के द्वारा विभिन्न भाषिक इकाईयों के आधार पर 'सृष्टि चक्र' कविता का विश्लेषण किया गया है। 'सृष्टि चक्र' में चयन का विश्लेषण ध्वनि, शब्द, रूप और वाक्य जैसे भाषिक इकाईयों के आधार पर किया गया है। किसी भी साहित्यिक कृति में रचनाकार अर्थ का ध्यान रखते हुए अनेक विकल्पों में से किसी एक शब्द का चयन करता है। इसलिए अर्थ के आधार पर 'सृष्टि चक्र' में चयन का विश्लेषण नहीं हुआ है। 'सृष्टि चक्र' में विचलन का विश्लेषण ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, प्रोक्ति, अर्थ एवं लेखिम जैसी भाषिक इकाईयों के आधार पर किया गया है। 'सृष्टि चक्र' में समानांतरता का विश्लेषण ध्वनि, शब्द, रूप और वाक्य जैसी भाषिक इकाईयों के आधार पर किया गया है। प्रोक्ति और अर्थ के स्तर 'सृष्टि चक्र' में समानांतरता के सटीक उदाहरण न मिलने के कारण समानांतरता का विश्लेषण नहीं किया जा सका।

चौथा अध्याय **'निष्पतियाँ'** हैं। इस अध्याय में उपर्युक्त तीनों अध्यायों में किए गए अध्ययन/विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को दर्शाया गया है। उन सभी अध्यायों का सार-संक्षेप भी प्रस्तुत किया गया।

पंचदेव प्रसाद